The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com

भारत में खेलों की आधारभूत संरचना एवं प्रशिक्षण सुविधाओं के विकास में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) की भूमिका का अध्ययन

डॉ. बृजेश कुमार यादव
एसोसिएट प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग
नागरिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंघई, जौनपुर, उत्तर प्रदेश।

सारांश

भारत में खेलों का विकास केवल अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक प्राप्त करने का विषय नहीं है, बल्कि यह जनस्वास्थ्य, युवा विकास, रोजगार और सामाजिक समावेशन से भी संबंधित है। गुणवत्तापूर्ण खेल मैदान, प्रशिक्षण केंद्र, प्रशिक्षक, खेल विज्ञान प्रयोगशालाएँ और उपकरण इस विकास के आधार हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारत में इन सुविधाओं के विस्तार में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) की भूमिका, संभावनाओं और सीमाओं का विश्लेषण करना है। अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है और दिसंबर 2022 तक प्रकाशित चयनित सरकारी दस्तावेजों, संसदीय उत्तरों और संस्थागत प्रतिवेदनों पर आधारित है। खेलो इंडिया के अंतर्गत अवसंरचना के लिए जारी धनराशि, प्रशिक्षकों की उपलब्धता तथा ओडिशा के खेल प्रशिक्षण केंद्रों के उदाहरणों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि निजी संस्थाओं की वित्तीय एवं तकनीकी क्षमता सार्वजनिक संसाधनों की पूरक बन सकती है। किंतु कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व, सरकारी अनुदान तथा विधिवत संविदात्मक पीपीपी में अंतर करना आवश्यक है। उपलब्ध साक्ष्य साझेदारी की उपयोगिता का संकेत देते हैं, परंतु राष्ट्रीय स्तर पर उसके स्वतंत्र प्रभाव का निर्धारण नहीं करते। अध्ययन जिला स्तर पर समावेशी, उत्तरदायी और परिणाम आधारित साझेदारी की रूपरेखा प्रस्तावित करता है।

प्रमुख शब्द: खेल अवसंरचना, सार्वजनिक-निजी भागीदारी, खेल प्रशिक्षण, खेलो इंडिया, सामाजिक उत्तरदायित्व, समावेशन।

1. प्रस्तावना

किसी देश की खेल उपलब्धियाँ वहाँ की प्रशिक्षण व्यवस्था, सामाजिक वातावरण और संसाधनों की उपलब्धता से गहराई से जुड़ी होती हैं। प्रतिभाशाली खिलाड़ी के लिए केवल व्यक्तिगत उत्साह पर्याप्त नहीं होता। उसे नियमित अभ्यास का अवसर, सुरक्षित मैदान, उपयुक्त उपकरण, योग्य प्रशिक्षक, पोषण और प्रतियोगिताओं में भाग लेने की सुविधा भी चाहिए। भारत में विविध खेल परंपराएँ और बड़ी युवा आबादी होने के बावजूद इन आवश्यकताओं की पूर्ति सभी स्थानों पर समान रूप से नहीं हो पाती। महानगर में उपलब्ध प्रशिक्षण व्यवस्था

और एक छोटे ग्रामीण क्षेत्र में उपलब्ध व्यवस्था के बीच अंतर खिलाड़ी की प्रगति को प्रभावित कर सकता है। इस अंतर को कम करना खेल नीति की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

खेल अवसंरचना का सामान्य अर्थ खेल से संबंधित भौतिक सुविधाओं से लिया जाता है, किंतु व्यापक अर्थ में इसके अंतर्गत मानव संसाधन और सहायक सेवाएँ भी आती हैं। एक आधुनिक स्टेडियम तब उपयोगी है जब उसका नियमित रखरखाव हो, उसका समय निर्धारण स्पष्ट हो और खिलाड़ियों को उचित प्रशिक्षण मिले। इसी तरह एक साधारण ग्रामीण मैदान भी अच्छे प्रशिक्षक तथा सुरक्षित वातावरण के साथ प्रतिभा विकास का प्रभावी माध्यम बन सकता है। इसलिए निर्माण और संचालन को अलग-अलग न देखकर एक निरंतर प्रक्रिया के रूप में समझना चाहिए।

सरकारी संस्थाओं के सामने शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य सार्वजनिक सेवाओं की अनेक प्राथमिकताएँ होती हैं। खेल क्षेत्र के लिए वित्तीय संसाधन जुटाने के साथ उनकी प्रभावी उपयोगिता सुनिश्चित करना भी चुनौती है। निजी कंपनियाँ, परोपकारी संस्थाएँ, खेल अकादमियाँ और तकनीकी विशेषज्ञ इस दिशा में सहयोग कर सकते हैं। सार्वजनिक-निजी भागीदारी का विचार इसी पूरकता पर आधारित है। सरकार सामाजिक उद्देश्य और सार्वजनिक हित की रक्षा करती है, जबकि निजी भागीदार विशेष ज्ञान, प्रबंधन क्षमता अथवा निवेश उपलब्ध करा सकता है। लेकिन निजी निवेश अपने आप सामाजिक लाभ की गारंटी नहीं बन जाता।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

खेल नीति पर चर्चा प्रायः बड़े स्टेडियमों, प्रसिद्ध खिलाड़ियों और पदक तालिकाओं के आसपास केंद्रित रहती है। इससे स्थानीय स्तर की आवश्यकताएँ पीछे छूट सकती हैं। विद्यालय में खेल अवधि होने के बावजूद मैदान न होना, जिला केंद्र में उपकरण होने के बावजूद प्रशिक्षक न होना या बालिकाओं के लिए सुरक्षित परिवहन का अभाव ऐसी समस्याएँ हैं जिनका समाधान केवल नए भवन से नहीं होता। साझेदारी की उपयोगिता तभी है जब वह इन व्यावहारिक बाधाओं को घटाए।

इस अध्ययन का महत्व नीति निर्माताओं, खेल प्रशासकों, शारीरिक शिक्षा के अध्यापकों और निजी संस्थाओं के लिए है। यह स्पष्ट करता है कि कहाँ निजी सहयोग उपयोगी हो सकता है तथा कहाँ सरकार को मुख्य वित्तीय जिम्मेदारी स्वयं उठानी चाहिए। अध्ययन में वित्तीय व्यवहार्यता और सामाजिक न्याय दोनों को समान महत्व दिया गया है। इन दोनों में संतुलन न होने पर खेल सुविधा व्यावसायिक रूप से सफल दिखाई दे सकती है, किंतु जरूरतमंद खिलाड़ी उससे बाहर रह सकते हैं।

3. अध्ययन के उद्देश्य

- भारत में खेल अवसंरचना एवं प्रशिक्षण व्यवस्था की आवश्यकताओं का अध्ययन करना।
- खेल विकास में सार्वजनिक और निजी संस्थाओं की भूमिकाओं तथा साझेदारी के स्वरूपों को स्पष्ट करना।
- वर्ष 2022 तक उपलब्ध सरकारी वित्तीय आँकड़ों एवं संस्थागत उदाहरणों का विश्लेषण करना।
- खेल सुविधाओं में पीपीपी की व्यवहार्यता, जोखिम और सामाजिक समावेशन की चुनौतियों की पहचान करना।
- समावेशी एवं परिणाम आधारित खेल साझेदारी के लिए व्यावहारिक रूपरेखा प्रस्तुत करना।

4. शोध विधि: प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक समीक्षा है। इसमें भारत को अध्ययन क्षेत्र माना गया है। खेलो इंडिया के वित्तीय अभिलेखों के लिए 2018–19 से मार्च 2022 तक की उपलब्ध श्रृंखला ली गई है। अन्य उदाहरणों

का चयन उनकी प्रासंगिकता तथा प्रकाशन तिथि के आधार पर किया गया है। स्रोतों की समय सीमा 31 दिसंबर 2022 निर्धारित की गई है। कोई प्राथमिक सर्वेक्षण, साक्षात्कार अथवा प्रयोग नहीं किया गया है।

स्रोत चयन में संसद में दिए गए सरकारी उत्तर, पत्र सूचना कार्यालय की विज्ञप्तियाँ, नीति आयोग के पूर्व-व्यवहार्यता अध्ययन, संसदीय समिति के निष्कर्ष और ओडिशा सरकार के प्रकाशित दस्तावेज प्रमुख हैं। यह व्यवस्थित समीक्षा या मेटा-विश्लेषण नहीं है। चयनित सामग्री को वित्त, संचालन, प्रशिक्षण, पहुँच और जोखिम की श्रेणियों में विभाजित करके पढ़ा गया। संख्यात्मक आँकड़ों को यथावत लिया गया और जहाँ आवश्यक था वहाँ प्रतिशत की गणना की गई। उदाहरणों की तुलना उनके घोषित स्वरूप एवं उपलब्ध उपलब्धियों के आधार पर की गई है।

विश्लेषण में सरकारी राशि की स्वीकृति, राशि जारी होने और वास्तविक व्यय को समान नहीं माना गया है। किसी परियोजना की घोषणा और उसके संचालन में भी अंतर रखा गया है। इसी प्रकार प्रशिक्षण केंद्र की प्रतियोगिता उपलब्धि को साझेदारी से सीधे उत्पन्न प्रभाव नहीं माना गया। कारणात्मक निष्कर्ष के लिए पूर्व स्थिति, तुलना समूह और दीर्घकालीन अनुवर्ती आँकड़े अपेक्षित हैं, जो चयनित दस्तावेजों में पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं हैं।

5. सार्वजनिक-निजी भागीदारी की संकल्पना

पीपीपी सार्वजनिक सेवा उपलब्ध कराने का एक ऐसा संस्थागत प्रबंध है जिसमें सरकारी संस्था और निजी भागीदार के बीच जिम्मेदारियाँ, जोखिम, अवधि एवं भुगतान की शर्तें निर्धारित होती हैं। इसमें निजी संस्था को केवल भवन बनाने का कार्य देना अनिवार्य रूप से पीपीपी नहीं है। यदि ठेकेदार निर्माण पूरा करके चला जाता है और संचालन का जोखिम सरकार के पास रहता है, तो वह सामान्य निर्माण अनुबंध है। लंबी अवधि की सेवा, प्रबंधन और प्रदर्शन संबंधी उत्तरदायित्व पीपीपी को अलग पहचान देते हैं। इस भेद को आर्थिक कार्य विभाग द्वारा सूचीबद्ध पीपीपी संदर्भ मार्गदर्शिका (2017) के आधार पर समझा जा सकता है।

खेल क्षेत्र में साझेदारी के व्यापक रूपों में कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर), प्रायोजन, परोपकारी सहयोग और संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आते हैं। इनका उद्देश्य पीपीपी से मिलता-जुलता हो सकता है, लेकिन उनकी कानूनी और वित्तीय संरचना अलग हो सकती है। उदाहरण के लिए उपकरण दान करने वाली कंपनी पर बीस वर्षों तक सेवा संचालन की जिम्मेदारी आवश्यक नहीं होती। इसके विपरीत दीर्घकालीन संचालन अनुबंध में उपकरणों की स्थिति और सेवाओं का स्तर भुगतान से जुड़ सकता है। इसलिए इस लेख में व्यापक साझेदारी और औपचारिक पीपीपी का अलग उल्लेख किया गया है।

6. भारत में संस्थागत एवं नीतिगत परिप्रेक्ष्य

भारत में खेल मुख्यतः राज्य का विषय है। राज्य सरकारों और केंद्रशासित प्रदेशों पर स्थानीय सुविधाओं के विकास की प्राथमिक जिम्मेदारी है। केंद्र सरकार विभिन्न योजनाओं, वित्तीय सहायता और राष्ट्रीय प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से इन्हें सहयोग देती है। खेल संघ, विद्यालय, विश्वविद्यालय, स्थानीय निकाय और निजी अकादमियाँ भी इस व्यवस्था में भाग लेते हैं। जुलाई 2022 के लोकसभा उत्तर में केंद्र द्वारा खेल परिसर, कृत्रिम एथलेटिक्स ट्रैक, हॉकी मैदान, बहुउद्देशीय हॉल तथा अन्य सुविधाओं के लिए सहायता उपलब्ध कराने का उल्लेख है (युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, 2022b)।

खेलो इंडिया योजना में जनभागीदारी और श्रेष्ठ खेल प्रदर्शन दोनों उद्देश्य महत्वपूर्ण हैं। फरवरी 2022 की सरकारी विज्ञप्ति में 2021–22 से 2025–26 की अवधि के लिए 3,165.50 करोड़ रुपये के परिव्यय की घोषणा की गई थी। यह उस समय की घोषणा है, न कि संपूर्ण अवधि का वास्तविक खर्च। कार्यक्रम के पुनर्गठन में सुविधाओं के उन्नयन, प्रतियोगिता, प्रतिभा विकास, खेल केंद्र, फिट इंडिया और समावेशन से संबंधित कार्य शामिल किए गए (पत्र सूचना कार्यालय, 2022)।

राज्य स्तर के उत्कृष्टता केंद्रों के लिए वर्ष 2020 की योजना ने पहले चरण में आठ राज्यों की सरकारी सुविधाओं को चुना। इस व्यवस्था में केंद्र और राज्य की जिम्मेदारियाँ थीं। खेल विज्ञान, उपकरण और विशेषज्ञों की जरूरतों की पूर्ति के लिए सहयोग की परिकल्पना की गई थी (पत्र सूचना कार्यालय, 2020)। इसे अपने आप निजी भागीदारी का प्रमाण नहीं माना जा सकता, परंतु यह उन सेवाओं की पहचान करने में मदद करता है जिनमें निजी विशेषज्ञ भी भविष्य में सहयोग दे सकते हैं।

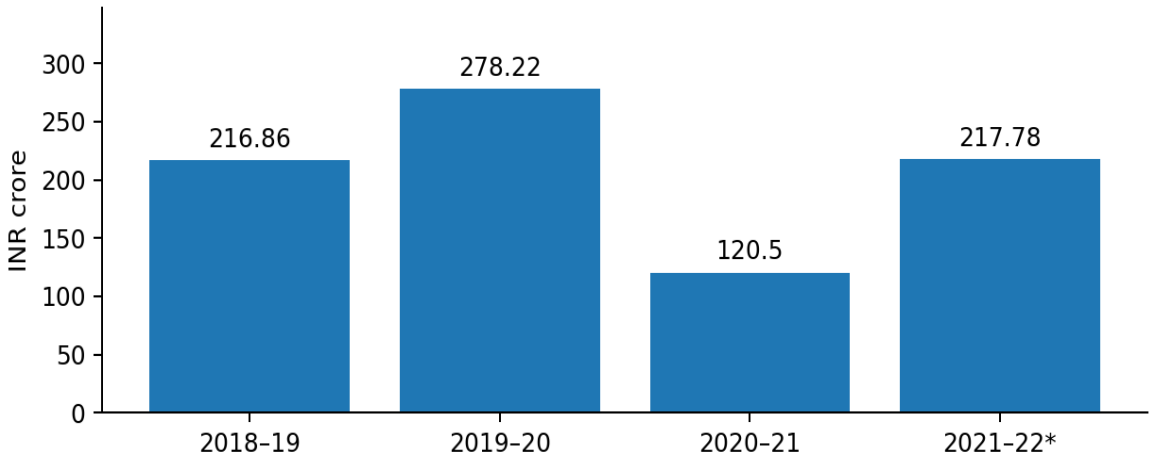
7. खेल अवसंरचना की वित्तीय स्थिति का विश्लेषण

मार्च 2022 के राज्यसभा उत्तर में खेलो इंडिया के अंतर्गत खेल अवसंरचना के विकास के लिए जारी राशि का विवरण दिया गया। तालिका 1 में संबंधित वित्तीय वर्षों के आँकड़े प्रस्तुत हैं। इनसे सरकारी वित्तीय प्रयास की प्रवृत्ति समझी जा सकती है, लेकिन यह निजी निवेश की राशि नहीं है।

तालिका 1. खेल अवसंरचना के लिए जारी राशि

वित्तीय वर्ष	करोड़ रुपये
2018–19	216.86
2019–20	278.22
2020–21	120.50
2021–22*	217.78

स्रोत: राज्यसभा प्रश्न 1916, 17 मार्च 2022। *उत्तर की तिथि तक।



ग्राफ 1. खेलो इंडिया के अंतर्गत सरकारी राशि; स्रोत: तालिका 1

चार वर्षों में कुल 833.36 करोड़ रुपये जारी किए गए। वर्ष 2019–20 में राशि पिछली अवधि से लगभग 28.3 प्रतिशत अधिक थी। अगले वर्ष इसमें लगभग 56.7 प्रतिशत की कमी आई। 2021–22 में मार्च के उत्तर तक राशि फिर बढ़ी। कमी का काल महामारी से मेल खाता है, परंतु इस दस्तावेज से यह निश्चित नहीं किया जा सकता कि पूरी कमी महामारी के कारण हुई। अंतिम वित्तीय वर्ष की राशि उत्तर दिए जाने तक की है, इसलिए उसे पूर्ण वित्तीय वर्ष की अंतिम राशि के बराबर नहीं मानना चाहिए।

इसी संसदीय उत्तर में राष्ट्रीय खेल विकास कोष के अंतर्गत विभिन्न संस्थाओं से 170.32 करोड़ रुपये प्राप्त होने की जानकारी दी गई थी। इस राशि में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के कॉर्पोरेट स्रोत शामिल हैं। इसे उपर्युक्त चार वर्षों की राशि के समान कालखंड का निजी निवेश मानकर प्रतिशत निकालना उचित नहीं होगा। इससे केवल इतना स्पष्ट होता है कि खेल विकास में सरकारी बजट के अतिरिक्त वित्तीय साधनों का उपयोग हो रहा था।

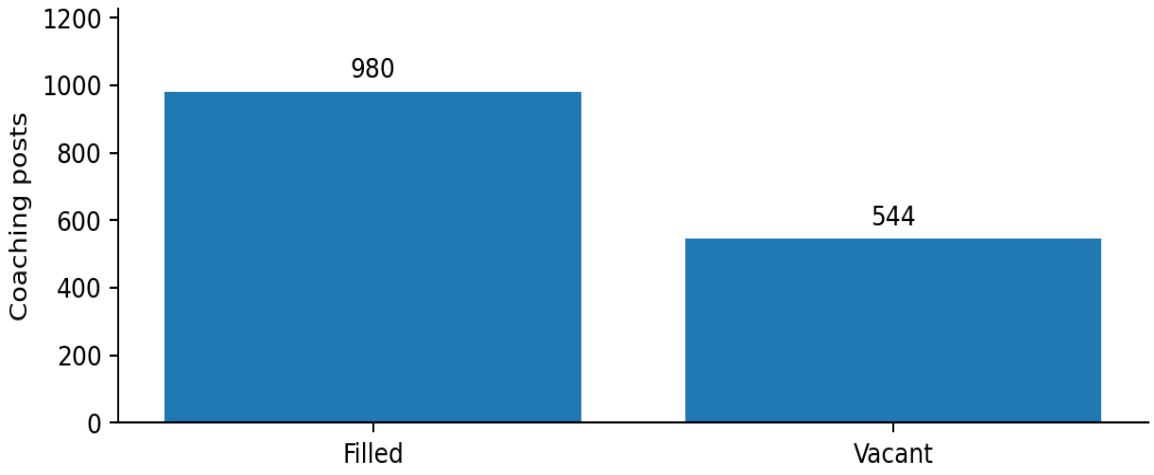
8. प्रशिक्षण सुविधाओं की स्थिति

प्रशिक्षण की गुणवत्ता का संबंध प्रशिक्षक की क्षमता, खिलाड़ी पर व्यक्तिगत ध्यान, खेल विज्ञान और अभ्यास की नियमितता से है। वर्ष 2019 की संसदीय समिति के विवरण में 1,524 प्रशिक्षक पदों में 980 भरे होने और 544 रिक्त होने की जानकारी उपलब्ध है। यह लगभग 35.7 प्रतिशत रिक्ति दर्शाता है। ये पद समिति द्वारा उल्लिखित व्यवस्था के हैं, भारत के सभी सार्वजनिक और निजी प्रशिक्षकों की संख्या नहीं हैं (संसदीय स्थायी समिति, 2019)।

तालिका 2. प्रशिक्षक पद

स्थिति	संख्या	प्रतिशत
भरे	980	64.3
रिक्त	544	35.7
कुल	1524	100

स्रोत: संसदीय स्थायी समिति (2019), पीआरएस सारांश।



ग्राफ 2. प्रशिक्षक पदों की स्थिति, 2019

इसी समीक्षा में वर्ष 2018–19 में प्रशिक्षण के लिए चुने गए 1,518 खिलाड़ियों में से केवल 625 के मान्यता प्राप्त अकादमियों में आने का उल्लेख है। शिक्षा की निरंतरता संबंधी कठिनाई को समिति ने एक महत्वपूर्ण कारण माना। ये आँकड़े संकेत देते हैं कि किसी बच्चे को प्रतिभाशाली घोषित कर देना पर्याप्त नहीं है। उसका विद्यालय, परिवार और आवास भी प्रशिक्षण व्यवस्था से जुड़ा होना चाहिए। निजी अकादमी के साथ समझौता करते समय इन शर्तों को सेवा का हिस्सा बनाया जा सकता है।

9. खेल विकास में पीपीपी के प्रमुख प्रतिमान

साझेदारी का स्वरूप स्थानीय मांग, संपत्ति की स्थिति और राजस्व की संभावना के अनुसार निर्धारित होना चाहिए। पहले से बने मैदान के संचालन की आवश्यकता और नए अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम की आवश्यकता एक जैसी नहीं है। ग्रामीण केंद्रों के लिए सरल सेवा अनुबंध उपयोगी हो सकता है, जबकि महानगरीय परिसर के लिए लंबी अवधि का निवेश अनुबंध विचारणीय हो सकता है। तालिका 3 में संभावित व्यवस्थाओं का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत है।

तालिका 3. साझेदारी के विकल्प

प्रतिमान	उपयुक्त कार्य	सावधानी
निर्माण-संचालन-हस्तांतरण	बड़ा परिसर	दीर्घकालीन मांग
संचालन अनुबंध	मौजूदा मैदान	सेवा स्तर
सीएसआर सहयोग	उपकरण व प्रशिक्षण	निरंतर वित्त
सेवा खरीद	विशेषज्ञ प्रशिक्षक	योग्यता व सुरक्षा

स्रोत: अध्ययन का संकल्पनात्मक वर्गीकरण। सीएसआर अपने आप औपचारिक पीपीपी नहीं है।

डिजाइन, निर्माण, वित्त, संचालन एवं हस्तांतरण प्रतिमान में निजी संस्था परिसर विकसित करके निर्धारित अवधि तक संचालित करती है। अवधि के अंत में हस्तांतरण की शर्तें पहले तय होती हैं। निर्माण की गुणवत्ता, वित्त जुटाने और संचालन का कुछ जोखिम निजी भागीदार ग्रहण कर सकता है। सरकार को भूमि अधिकार, सार्वजनिक पहुँच और सुरक्षा संबंधी शर्तों की रक्षा करनी होती है। यह प्रतिमान तभी उपयुक्त है जब दीर्घकालीन मांग का विश्वसनीय आकलन हो।

संचालन एवं रखरखाव की व्यवस्था में सरकार के पास संपत्ति बनी रहती है, लेकिन विशेष संस्था से प्रबंधन कराया जा सकता है। मैदान की देखरेख, प्रकाश व्यवस्था, उपकरणों की जाँच और प्रशिक्षकों की समय-सारणी जैसे कार्य स्पष्ट किए जा सकते हैं। छोटे केंद्रों के लिए इससे जटिल वित्तीय अनुबंध की आवश्यकता घट सकती है। हालांकि खराब अनुबंध होने पर निजी प्रबंधक खर्च बचाने के लिए सेवा की गुणवत्ता कम कर सकता है। नियमित निरीक्षण इस जोखिम को नियंत्रित करता है।

10. चयनित भारतीय उदाहरण

10.1 ओडिशा में हॉकी प्रशिक्षण की साझेदारी

अगस्त 2019 में भुवनेश्वर में नवल टाटा हॉकी अकादमी का उद्घाटन हुआ। यह ओडिशा सरकार, टाटा स्टील और टाटा ट्रस्ट्स की संयुक्त पहल थी। कार्यक्रम की परिकल्पना में स्थानीय प्रतिभा की पहचान से लेकर क्षेत्रीय प्रशिक्षण और उच्च स्तर की अकादमी तक जाने का रास्ता शामिल था। मौजूदा सार्वजनिक परिसंपत्तियों और बाहरी प्रशिक्षण विशेषज्ञता का सम्मिलित उपयोग इस उदाहरण की विशेषता है (टाटा स्टील, 2019)।

इस प्रकार का ढाँचा छोटे स्थानों के खिलाड़ियों को बड़े केंद्र तक पहुँचाने में सहायक हो सकता है। स्थानीय प्रशिक्षक समुदाय से परिचित होते हैं, जबकि उच्च प्रदर्शन केंद्र उन्नत अभ्यास और प्रतियोगिता की तैयारी कर सकते हैं। उपलब्ध विज्ञप्ति से कार्यक्रम की संरचना का पता चलता है, परंतु इसकी पूरी लागत, वित्तीय जोखिमों और दीर्घकालीन परिणामों का स्वतंत्र मूल्यांकन नहीं मिलता। इसलिए इसे व्यापक साझेदारी का उदाहरण माना गया है, औपचारिक रियायत अनुबंध का प्रमाण नहीं।

10.2 एथलेटिक्स में ओडिशा और रिलायंस फाउंडेशन

ओडिशा सरकार तथा रिलायंस फाउंडेशन के बीच 2018 में हुए समझौते के आधार पर एथलेटिक्स उच्च प्रदर्शन केंद्र विकसित किया गया। अगस्त 2020 में राज्य विभाग के दस्तावेज में केंद्र के खिलाड़ियों की तीन अलग प्रतियोगिताओं की उपलब्धियाँ दी गईं। नवंबर 2019 की जूनियर राष्ट्रीय प्रतियोगिता में तीन, दिसंबर की राज्य प्रतियोगिता में 25 और जनवरी 2020 की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में 13 पदक बताए गए।

तालिका 4. एथलेटिक्स केंद्र की रिपोर्ट की गई उपलब्धियाँ

प्रतियोगिता	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल
जूनियर राष्ट्रीय, 2019	2	0	1	3
राज्य, 2019	10	8	7	25
RFYS राष्ट्रीय, 2020	4	3	6	13

स्रोत: ओडिशा खेल विभाग, 20 अगस्त 2020। अलग प्रतियोगिताओं के परिणाम।

इन उपलब्धियों से केंद्र में प्रतियोगिता की तैयारी और भागीदारी का संकेत मिलता है। फिर भी तीनों प्रतियोगिताओं के स्तर और प्रतिभागियों की संख्या समान नहीं हैं। पदकों की अधिक संख्या को प्रशिक्षण की अधिक प्रभावशीलता मानना उचित नहीं है। खिलाड़ियों की पूर्व क्षमता तथा चयन प्रक्रिया भी परिणामों को प्रभावित करती है। भविष्य में केंद्र की उपयोगिता का आकलन प्रशिक्षण अवधि, व्यक्तिगत श्रेष्ठ प्रदर्शन और खिलाड़ी प्रतिधारण से करना बेहतर होगा।

10.3 दिल्ली के स्टेडियमों के पुनर्विकास का प्रस्ताव

नीति आयोग ने जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम और इंदिरा गांधी स्टेडियम के पुनर्विकास के लिए पूर्व-व्यवहार्यता अध्ययन प्रकाशित किए। इन अध्ययनों में मौजूदा परिसरों की बेहतर उपयोगिता और निजी भागीदारी के विकल्पों पर विचार हुआ। ये दस्तावेज पीपीपी की संभावनाओं को समझने के लिए उपयोगी हैं, लेकिन इनका अस्तित्व परियोजनाओं के पूरा होने का प्रमाण नहीं है (नीति आयोग, 2018, 2019)।

दिल्ली जैसे महानगर में खेल आयोजन के अतिरिक्त परिसर की अन्य अनुमत गतिविधियों से आय प्राप्त हो सकती है। इससे रखरखाव में मदद मिलने की संभावना है। दूसरी ओर अत्यधिक व्यावसायिक उपयोग नियमित प्रशिक्षण को बाधित कर सकता है। इसलिए अभ्यास के लिए सुरक्षित समय, यातायात प्रबंधन और सार्वजनिक उपयोग की शर्तें आवश्यक हैं। एक महानगरीय प्रस्ताव की वित्तीय संरचना को बिना बदलाव किसी ग्रामीण जिले में लागू करना उपयुक्त नहीं होगा।

11. पीपीपी की संभावित भूमिका और लाभ

11.1 वित्तीय संसाधन तथा जीवनचक्र प्रबंधन

निजी भागीदार पूंजी, उपकरण और विशेषज्ञ सेवाएँ उपलब्ध कराकर सरकारी प्रयासों का विस्तार कर सकते हैं। फिर भी निजी वित्त निःशुल्क धन नहीं है। निवेश की वापसी शुल्क, सरकारी भुगतान या अन्य अनुमत आय से होती है। इसलिए परियोजना के पूरे जीवनकाल में होने वाले खर्च की गणना जरूरी है। प्रारंभिक निर्माण कम खर्च में होना पर्याप्त नहीं है यदि कुछ वर्षों बाद मैदान अनुपयोगी हो जाए। समझौते में नियमित मरम्मत, उपकरण बदलने और परिसंपत्ति के हस्तांतरण की स्थिति निर्धारित होनी चाहिए। उदाहरण के लिए तैराकी केंद्र में जल गुणवत्ता और सुरक्षा कर्मचारियों की उपलब्धता रोजमर्रा के खर्च हैं। यदि इनकी जिम्मेदारी अस्पष्ट है, तो सुविधा का संचालन प्रभावित होगा। भुगतान को सत्यापित उपलब्धता से जोड़ना इस समस्या का एक संभावित समाधान है।

11.2 खेल विज्ञान और तकनीक

उच्च स्तर के प्रशिक्षण में जैव-यांत्रिकी, शरीर क्रिया विज्ञान, पोषण, खेल मनोविज्ञान और पुनर्वास का महत्व है। हर जिले में सभी विशेषज्ञ नियुक्त करना आर्थिक रूप से संभव नहीं हो सकता। साझा क्षेत्रीय प्रयोगशाला, प्रशिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण और निर्धारित समय पर विशेषज्ञ परामर्श जैसे विकल्प अपनाए जा सकते हैं। निजी सहयोग इन सेवाओं को उपलब्ध कराने का एक माध्यम हो सकता है। तकनीक के उपयोग में खिलाड़ी की निजता का संरक्षण भी आवश्यक है। प्रशिक्षण संबंधी वीडियो, स्वास्थ्य विवरण और प्रदर्शन के अभिलेख केवल तय उद्देश्य के लिए इस्तेमाल किए जाने चाहिए। बच्चों के अभिलेखों के लिए विशेष सावधानी और अभिभावक की जानकारी जरूरी है। उपकरणों का चयन विज्ञापन के बजाय प्रशिक्षण की वास्तविक आवश्यकता के अनुसार किया जाना चाहिए।

11.3 स्थानीय रोजगार एवं प्रतिभा विकास

खेल केंद्र प्रशिक्षकों, मैदान कर्मियों, उपकरण तकनीशियनों और आयोजन कर्मचारियों के लिए काम के अवसर बना सकते हैं। पूर्व खिलाड़ियों को उचित प्रशिक्षण के बाद स्थानीय प्रशिक्षक बनाया जा सकता है। इससे समुदाय के बच्चों को अनुभवी मार्गदर्शन मिलने की संभावना है। लेकिन रोजगार की वास्तविक संख्या जानने के लिए संविदा और कार्यरत कर्मचारियों के आँकड़े आवश्यक होंगे। केवल केंद्र खुलने से निश्चित रोजगार वृद्धि का दावा नहीं किया जाना चाहिए।

12. सामाजिक समावेशन तथा ग्रामीण खेल विकास

ग्रामीण क्षेत्रों में कम जनघनत्व और सीमित क्रय क्षमता के कारण केवल उपयोगकर्ता शुल्क पर आधारित परियोजना आकर्षक नहीं हो सकती। ऐसी स्थिति में सरकार को मूलभूत सेवाओं के लिए भुगतान करना होगा। स्थानीय विद्यालयों के मैदान, पंचायत की भूमि और जिला प्रशिक्षण केंद्र को साझा व्यवस्था में जोड़ना एक संभावित विकल्प है। अलग-अलग गाँवों में भ्रमण करने वाले प्रशिक्षक और निर्धारित प्रतियोगिताएँ बच्चों की पहचान में मदद कर सकती हैं।

बालिकाओं और दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए सुविधाओं की उपलब्धता को अनुबंध का मापनीय उद्देश्य बनाना चाहिए। सुरक्षित शौचालय, प्रकाश, महिला प्रशिक्षक की उपलब्धता, सुगम प्रवेश और शिकायत तंत्र जैसी व्यवस्थाएँ महत्वपूर्ण हैं। केवल पंजीकरण की संख्या से समान भागीदारी का पता नहीं चलता। नियमित उपस्थिति, प्रशिक्षण छोड़ने के कारण और यात्रा संबंधी कठिनाइयों पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों के लिए निशुल्क या रियायती समय निर्धारित किया जा सकता है। यदि व्यावसायिक उपयोग से आय प्राप्त होती है तो उसका एक भाग सार्वजनिक प्रशिक्षण में लगाने की व्यवस्था अनुबंध में होनी चाहिए। सहायता के पात्र बच्चों की पहचान पारदर्शी होनी चाहिए। किसी कंपनी के प्रचार अभियान को खिलाड़ी चयन का आधार नहीं बनाया जाना चाहिए।

13. प्रमुख जोखिम एवं समाधान

सबसे महत्वपूर्ण जोखिम व्यावसायिक उपयोग और सार्वजनिक हित के बीच टकराव है। यदि भागीदार की आय केवल सदस्यता शुल्क पर निर्भर हो तो वह अधिक भुगतान करने वाले समूहों को प्राथमिकता दे सकता है। न्यूनतम सार्वजनिक समय और शुल्क सीमा की स्पष्ट शर्त इस समस्या को कम कर सकती है। दूसरे जोखिम में निर्माण लागत बढ़ना, मांग अनुमान गलत होना तथा रखरखाव की उपेक्षा शामिल हैं। इनका वितरण उस संस्था को करना उचित है जो संबंधित जोखिम को नियंत्रित कर सके।

तालिका 5. जोखिम और नियंत्रण

जोखिम	प्रस्तावित नियंत्रण
अधिक शुल्क	शुल्क सीमा और आरक्षित समय
निर्माण में देरी	चरणवार निरीक्षण
कम उपयोग	स्थानीय मांग का सर्वेक्षण
सुरक्षा	स्वतंत्र निरीक्षण व शिकायत तंत्र

स्रोत: अध्ययन का विश्लेषण।

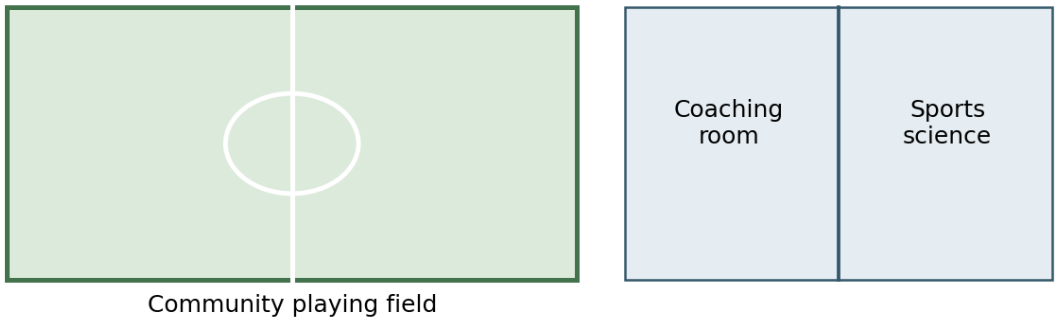
अनुबंध की अवधि में सरकार और निजी संस्था के बीच सूचना की असमानता हो सकती है। प्रबंधक वास्तविक आय और खर्च जानता है, जबकि सरकारी निरीक्षक के पास सीमित जानकारी होती है। डिजिटल अभिलेख, स्वतंत्र लेखा परीक्षण और सार्वजनिक शिकायत व्यवस्था इसके समाधान में सहायक हैं। खेल प्रशिक्षण में बच्चों की सुरक्षा गंभीर विषय है। प्रशिक्षकों की उपयुक्तता की जाँच, आचार संहिता और शिकायत पर त्वरित कार्रवाई अनिवार्य होनी चाहिए।

14. प्रस्तावित जिला स्तरीय साझेदारी रूपरेखा

अध्ययन के आधार पर जिले में तीन स्तरों की संरचना प्रस्तावित है। पहले स्तर में विद्यालय और ग्राम खेल केंद्र होंगे, जहाँ दैनिक अभ्यास और प्रतिभा पहचान होगी। दूसरे स्तर में जिला प्रशिक्षण केंद्र होगा, जहाँ विशेष प्रशिक्षक, प्रतियोगिताएँ और बुनियादी खेल विज्ञान सहायता उपलब्ध होगी। तीसरे स्तर में क्षेत्रीय उच्च प्रदर्शन केंद्र होंगे, जहाँ चयनित खिलाड़ियों के लिए उन्नत प्रशिक्षण होगा। यह रूपरेखा अध्ययन का प्रस्ताव है, किसी लागू राष्ट्रीय कार्यक्रम का विवरण नहीं।



चित्र 1. प्रस्तावित तीन स्तरीय प्रशिक्षण व्यवस्था (मौलिक आरेख)।



चित्र 2. सामुदायिक मैदान और सहायक प्रशिक्षण सुविधाओं का सांकेतिक विन्यास (मौलिक चित्र)।

इस व्यवस्था में जिला प्रशासन सुविधाओं की सूची बनाएगा और पहले से उपलब्ध मैदानों का उपयोग जाँचेगा। निजी भागीदार की नियुक्ति से पूर्व स्थानीय मांग, संभावित खर्च तथा सामाजिक लाभ का आकलन किया जाएगा। अनुबंध के दौरान सेवाओं का सत्यापन स्वतंत्र समिति के माध्यम से होना चाहिए। खिलाड़ी तथा अभिभावक भी नियमित प्रतिपुष्टि दे सकें। स्थानीय केंद्रों से उच्च प्रदर्शन केंद्रों तक जाने के लिए चयन मानदंड प्रकाशित किए जाने चाहिए।

15. मूल्यांकन के संकेतक

पीपीपी का मूल्यांकन केवल भवन और पदक आधारित नहीं होना चाहिए। खिलाड़ी की सेवा तक पहुँच, अभ्यास की नियमितता, उपकरणों की स्थिति, प्रशिक्षक की उपस्थिति, सुरक्षा तथा वित्तीय स्थिरता सभी आवश्यक हैं। परिणामों को अनुबंध के प्रारंभिक आधार स्तर से तुलना करके मापना चाहिए। तालिका में सुझाए गए संकेतक भविष्य के मूल्यांकन के लिए हैं; इन्हें वास्तविक प्राप्त आँकड़े नहीं माना गया है।

तालिका 6. प्रस्तावित मूल्यांकन संकेतक

क्षेत्र	माप
पहुँच	नियमित खिलाड़ी एवं आरक्षित समय
गुणवत्ता	प्रशिक्षक उपस्थिति, उपकरण स्थिति
समावेशन	समूहवार उपस्थिति और प्रतिधारण
सुरक्षा	घटनाएँ तथा शिकायत निवारण
वित्त	प्रति सक्रिय खिलाड़ी लागत

स्रोत: अध्ययन द्वारा प्रस्तावित संकेतक।

वित्तीय व्यवहार्यता और सार्वजनिक मूल्य

परियोजना का निर्णय केवल इस आधार पर नहीं किया जाना चाहिए कि निजी संस्था आरंभिक पूंजी जुटाने के लिए तैयार है। एक सार्वजनिक विकल्प की अनुमानित लागत और साझेदारी के अंतर्गत सरकार द्वारा किए जाने वाले भुगतान की तुलना होनी चाहिए। तुलना में जमीन का अवसर मूल्य, भविष्य की मरम्मत, मांग में परिवर्तन और अनुबंध समाप्त होने के बाद की स्थिति भी शामिल होनी चाहिए।

यदि समान सेवा सार्वजनिक संचालन में कम लागत पर मिल सकती है, तो पीपीपी अपनाना आवश्यक नहीं है। निर्णय का आधार नागरिकों को प्राप्त कुल लाभ होना चाहिए।

उदाहरण के लिए किसी जिला परिसर में सुबह विद्यालय के बच्चों के लिए आरक्षित समय, दोपहर में चयनित खिलाड़ियों का प्रशिक्षण और शाम में सामान्य नागरिकों की सशुल्क गतिविधियाँ निर्धारित की जा सकती हैं। इस उदाहरण में शुल्क से प्राप्त आय संचालन खर्च का कुछ हिस्सा पूरा कर सकती है। लेकिन यदि आय अपेक्षा से कम हो तो बच्चों का प्रशिक्षण बंद न हो, इसके लिए पहले से वित्तीय व्यवस्था की जानी चाहिए। यह काल्पनिक कार्यप्रणाली है, वास्तविक परियोजना का वित्तीय विवरण नहीं है।

साझेदारी की समीक्षा में सरकार को ऐसी प्रतिबद्धताओं को भी दर्ज करना चाहिए जिनके कारण भविष्य में अतिरिक्त भुगतान करना पड़ सकता है। अस्पष्ट राजस्व गारंटी से सार्वजनिक बजट पर अनियोजित बोझ पड़ सकता है। परियोजना के चयन में एक से अधिक योग्य संस्थाओं को प्रतिस्पर्धा का अवसर देना और अनुबंध में संशोधन के कारणों को सार्वजनिक करना विश्वास बढ़ाने के साधन हैं। इस तरह वित्तीय अनुशासन और सामाजिक उद्देश्य परस्पर विरोधी नहीं रहते।

16. चर्चा एवं प्रमुख निष्कर्ष

अध्ययन से सरकारी वित्तीय सहायता की महत्वपूर्ण भूमिका स्पष्ट होती है। चार वित्तीय वर्षों की जारी राशि में उतार-चढ़ाव दिखाई देता है, जिससे दीर्घकालीन संचालन के लिए स्थिर योजना की जरूरत समझी जा सकती है। प्रशिक्षक रिक्ति और प्रशिक्षण में प्रवेश न लेने वाले चयनित खिलाड़ियों का उदाहरण यह दर्शाता है कि खेल विकास में मानव संसाधन और शिक्षा का संबंध भी महत्वपूर्ण है।

ओडिशा के उदाहरण बताते हैं कि सरकारी संपत्ति और निजी विशेषज्ञता को जोड़ने के व्यावहारिक रास्ते मौजूद थे। दिल्ली के अध्ययन बड़े परिसरों के व्यावसायिक तथा सार्वजनिक उपयोग के बीच संतुलन की आवश्यकता सामने रखते हैं। इन उदाहरणों से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि निजी प्रबंधन हर परिस्थिति में सरकारी प्रबंधन से श्रेष्ठ है। यह निर्णय तुलनीय खर्च और परिणाम के आधार पर किया जाना चाहिए।

17. सुझाव

प्रत्येक राज्य को खेल सुविधाओं का मानचित्रण कर प्राथमिकता वाले जिलों की पहचान करनी चाहिए। नए निर्माण के पहले मौजूदा परिसंपत्ति के उन्नयन की व्यवहार्यता देखी जाए। निजी भागीदारी के लिए पारदर्शी चयन, स्पष्ट जोखिम वितरण तथा सार्वजनिक उपयोग की न्यूनतम शर्तें निर्धारित हों। विद्यालयी शिक्षा और खेल प्रशिक्षण में समन्वय स्थापित किया जाए। ग्रामीण और कम आय वाले क्षेत्रों को सरकारी सहायता के बिना व्यावसायिक मॉडल पर निर्भर न रखा जाए। स्वतंत्र मूल्यांकन में खिलाड़ियों की सुरक्षा, महिला भागीदारी एवं सुविधा की नियमित उपलब्धता को प्राथमिकता दी जाए।

18. सीमाएँ एवं भावी शोध

अध्ययन चयनित प्रकाशित स्रोतों तक सीमित है। औपचारिक खेल पीपीपी की राष्ट्रीय परियोजना सूची, निजी निवेश की सुसंगत श्रृंखला और परियोजना स्तर के लेखा आँकड़े उपलब्ध नहीं होने से राष्ट्रीय निवेश हिस्सेदारी की गणना नहीं की गई है। उदाहरणों की विज्ञप्तियाँ संबंधित संस्थाओं की अपनी रिपोर्ट हैं। भविष्य में अलग-अलग राज्यों के तुलनीय केंद्रों का खर्च, उपयोग, खिलाड़ी प्रतिधारण तथा व्यक्तिगत प्रदर्शन का अध्ययन किया जा सकता है।

19. निष्कर्ष

भारत में खेलों की आधारभूत संरचना और प्रशिक्षण का विस्तार एक साझा सामाजिक जिम्मेदारी है। निजी क्षेत्र की क्षमता सरकारी प्रयासों को पूरक सहयोग दे सकती है, विशेषकर संचालन, उपकरण और विशेषज्ञ प्रशिक्षण में। किंतु सार्वजनिक उत्तरदायित्व का स्थान निजी लाभ नहीं ले सकता। पीपीपी की सफलता स्पष्ट अनुबंध, न्यायपूर्ण पहुँच, सुरक्षित प्रशिक्षण और निरंतर मूल्यांकन पर निर्भर करती है। ऐसी संतुलित व्यवस्था ही स्थानीय प्रतिभा से लेकर उच्चस्तरीय प्रदर्शन तक विकास का टिकाऊ मार्ग बना सकती है।

संदर्भ सूची

- युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय. (2022a). Funds for sports infrastructure. राज्यसभा प्रश्न 1916, 17 मार्च. https://sansad.in/getFile/annex/256/AU1916.pdf?source=pqars
- युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय. (2022b). Modernizing basic sports infrastructure. लोकसभा प्रश्न 1576, 26 जुलाई. https://sansad.in/getFile/loksabhaquestions/annex/179/AU1576.pdf?source=pqals
- पत्र सूचना कार्यालय. (2022). Khelo India scheme allocation increases by 48% in Budget 2022–23. 2 फरवरी. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1794863
- पत्र सूचना कार्यालय. (2020). Sports Ministry to establish Khelo India State Centres of Excellence. 17 जून. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1632031
- संसदीय स्थायी समिति. (2019). Khelo India scheme. पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च का प्रतिवेदन सारांश. https://prsindia.org/policy/report-summaries/khelo-india-scheme
- नीति आयोग. (2018). Pre-feasibility study for redevelopment of Jawaharlal Nehru Stadium under PPP mode. https://www.niti.gov.in/node/739
- नीति आयोग. (2019). Pre-feasibility study for redevelopment of Indira Gandhi Stadium Complex under PPP mode. https://www.niti.gov.in/node/740
- टाटा स्टील. (2019). Odisha CM inaugurates NTHA Odisha. 13 अगस्त. https://sports.odisha.gov.in/sites/default/files/2022-01/Aug132019PressRelease-NTHA.pdf
- ओडिशा सरकार, खेल एवं युवा सेवा विभाग. (2020). Reliance Foundation Odisha Athletics High Performance Centre. 20 अगस्त. https://sports.odisha.gov.in/sites/default/files/2022-01/RFYSOdishaAthleticsHPC.pdf
- World Bank Group et al. (2017). Public-private partnerships reference guide (Version 3). https://www.pppinindia.gov.in/guidance_material_and_reference_doc

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-January-2023/42

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ. बृजेश कुमार यादव

for publication of research paper title

भारत में खेलों की आधारभूत संरचना एवं प्रशिक्षण सुविधाओं के विकास में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) की भूमिका का अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and
E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-04, Month January, Year-2023.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com